Date – 14/09/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – I (Hons.)

Topic – Leibnitz : Monads concept

Scanned with CamScanner

लाइबनित्स (Leibnitz) मोनड या चिद्‌णु (Monads)

लाइबनित्स के दर्शन में द्रव्य को 'चिद्‌णु' या 'मोनड' कहा गया है। लाइबनित्स द्रव्य के सम्बन्ध में डेकार्ट और स्पिनोजा द्वारा दी गयी परिभाषा को अस्वीकार करते हैं। द्रव्य की परिभाषा के सन्दर्भ में इन विचारकों ने स्वतंत्रता का अर्थ स्वतंत्र सत्ता या निरपेक्ष अस्तित्व के रूप में स्वीकार किया था। परन्तु लाइबनित्स के अनुसार स्वतंत्रता का अर्थ स्वतंत्र क्रिया - शक्ति है। इनके अनुसार द्रव्य वह है जो स्वतंत्र क्रिया - शक्ति सम्पन्न हो। मोनड की यह परिभाषा बौद्धों द्वारा दी गई सत् की परिभाषा के समरूप प्रतीत होती है। बौद्धमतानुसार अर्थ क्रियाकारित्व लक्षणं सत् अर्थात् सत् वही है जिसमें किसी कार्य को उत्पन्न करने की शक्ति हो। स्पष्ट है कि मोनड की परिभाषा में स्वतंत्र शक्ति पर बल है न कि विस्तार या आकार पर।

लाइबनित्स के दर्शन में इन द्रव्यों को ही 'मोनड' (Monad) कहा गया है जिसे हिन्दी में 'चिद्‌णु' कहते हैं। प्रत्येक शक्ति सम्पन्न विशेष पदार्थ एक द्रव्य है। इस प्रकार जगत में अनेक द्रव्यों को मानने के कारण लाइबनित्स का दर्शन बहुतत्ववादी (Pluralism) कहलाता है। डेकार्ट ने चित्त और अचित्त रूपी दो तत्वों को मानकर द्वैतवाद की स्थापना की थी। स्पिनोजा ने ईश्वर को एकमात्र द्रव्य मानकर एकतत्ववाद को स्थापित किया, वहीं लाइबनित्स ने अनेक द्रव्यों को मानकर बहुतत्ववाद की स्थापना की।

Scanned with CamScanner

मोनड की प्रमुख विशेषताएँ (Characteristics of Monads)

लाइबनित्स के अनुसार मोनड की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ हैं—

(i) मोनड चेतन, तात्विक और निरवयव है। निरवयव होने के कारण ये अविभाज्य हैं।

(ii) मोनड अपनी शक्ति का केन्द्र स्वयं है।

(iii) मोनड अनादि एवं अनन्त है।

(iv) प्रत्येक मोनड अपने-आप में पूर्ण है।

(v) शक्ति स्वरूप होने के कारण प्रत्येक मोनड गतिशील (Mobile) है।

(vi) लाइबनित्स मोनड को गवाक्षहीन (Windowless) मानते हैं। उन्हें गवाक्षहीन कहने का आशय है कि वे न तो दूसरे से प्रभावित होते हैं और न दूसरे को प्रभावित करते हैं। दूसरे शब्दों में विभिन्न मोनडों में कोई वास्तविक आदान-प्रदान नहीं होता। उनमें कोई पारस्परिक सम्बन्ध नहीं होता। वे पूर्ण, आत्मनिर्भर, आत्मसंचालित एवं स्वतंत्र हैं।

(vii) गवाक्षहीन होने पर भी प्रत्येक मोनड में दो समान लक्षण हैं जिसके कारण हमें आभासित होता है कि उनमें साक्षात सम्बन्ध है। प्रत्येक मोनड में दो प्रकार की शक्तियाँ पाई जाती हैं—

(i) ईक्षण (Perception)

(ii) प्रयासन (Appetition)

Scanned with CamScanner